E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मुंशी प्रेमचंद के साहित्य में नारी व्यथा

विवेक आत्रेय

एम.ए. (हिन्दी),

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

Paper Rcevied date

05/05/2025

Paper date Publishing Date

10/05/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15593908

प्रस्तावना

कहते है 'साहित्य समाज का दर्पण होता है। किसी भी समाज, संस्कृति या राष्ट्र का प्रतिबिंब उस समाज, संस्कृति या राष्ट्र के साहित्य में देखा जा सकता है। इसी दर्पण को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने हेतु हिंदी साहित्य में अनेक साहित्यकार हुए। इन सबमें मुंशी प्रेमचंद जी अग्रणीय भूमिका में नजर आते हैं। समाज के हर वर्ग को आधार बनाकर इन्होने अपनी रचनाएं लिखी । किसान, जवान, दलित, आदिवासी, नारी इत्यादि हर वर्ग की समस्याओं को छूने का प्रयास मुंशी प्रेमचंद जी ने अपनी कलम के माध्यम से किया।

नारी संवेदनशीलता भी मुशीं प्रेमचंद जी की रचनाओं का आधार रही है। समाज में स्त्री को पुरुष के समान अधिकार दिलवाने हेतु आज भी उनकी रचनाएं प्रासंगिक है। स्त्री- पुरुष समानता एवं स्त्री स्थिति में सुधार हेतु उन्होंने अपनी कलम को हथियार बनाकर अपने साहित्य के माध्यम से समाज को दर्पण दिखलाने का कार्य किया। नारी उत्थान की कामना करता उनका साहित्य एक नया उद्घोष करता नजर आता है जहां विश्व की आधी आबादी अपने अधिकार के लिए संघर्षरत है।

नवजागरण और नारी:-

भारतीय समाज में वैदिक, उपनिषद काल में नारियों को पुरुषों के बराबर दर्जा प्राप्त था। स्त्रियों को भी 'उपनयन संस्कार (धार्मिक कर्मकांड की दीक्षा) दिए जाते थे। लेकिन समय के साथ-साथ सामाजिक स्थितियां बदलने लगी।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

स्त्रियों के 'रजोधर्म' के कारण अपवित्रता का विचार कर उन्हें यज्ञ आदि पवित्र कार्यों से अलग कर दिया गया। उपनयन संस्कार 'आदि से भी वंचित कर दिया गया। बुद्धकाल में स्त्रियां पुरुषों के साथ सम्मिलित होती थीं, किंतु रामायण, महाभारत काल तक आते-आते खियां अपने पद, प्रतिष्ठा, गौरव आदि खो चुकी थी। अब वे गृहस्थ कार्य तक ही सीमित थी। उनकी शारीरिक पवित्रता का ध्यान रखते हुए उन्हें बचपन में ही विवाह के बंधनों में बांध दिया जाता था। जिससे 'बाल विवाह को प्रोत्साहन मिला।

कालांतर में हिंदू कर्मकांड के प्रभाव से वर्णाश्रम व्यवस्था को बढ़ावा मिला। जिससे नारी दलित की श्रेणी में आ गई। समाज को 'नारी ताड़न' का अधिकार मिल गया। नारी समाज द्वारा थोपे गए सभी मानवीय एवं अमानवीय व्यवहार को मानने के लिए मजबूर हो गई। फिर नारी जागरण की शुरुआत कब और कहां से हुई ? यह प्रश्न विचारणीय है। इतिहास में यदि झांके तो नवजागरण या पुनर्जागरण ऐसी सांस्कृतिक प्रक्रिया है जो बहुत से देशों के इतिहास में घटित हुआ। इसमें यूरोपीय नवजागरण उल्लेखनीय है- "जब 1453 ई. में कोन्सर्टेटिनोपल नगर के पतन के बाद वहां के नागरिकों ने इटली एवं आसपास के क्षेत्रों में शरण ली। इस नए संपर्क के फलस्वरूप ज्ञान विज्ञान एवं कलाओं का यूरोप में विकास हुआ। " पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएं थी- "स्वतंत्र चिंतन, वैज्ञानिक व्याख्या, तर्क व बुद्धि की प्रधानता, अंधविश्वासों, रूढ़ियों एवं बंधनों की मुक्ति से छटपटा, अस्तित्ववादी भावना, मानववादी विचारधारा एवं स्वतंत्र चहुंमुखी विकास।" उस समय चूंकि ब्रिटिश शासकों का गढ़ बंगाल था । अतः इस नई क्रांति की सुगबुगाहट भारतवर्ष पर भी दिखाई देने लगी। यहीं भारतीय एवं यूरोपीय संस्कृति की टकराहट देखने को मिलती है।

प्रेमचंद जैसे जागरुक साहित्यकार ने भी अपने साहित्य (उपन्यासों, कहानियों, लेखों, संपादकीय विचारों आदि) के द्वारा नारी को दयनीय स्थिति से उबारने का प्रयास आरंभ किया । वे तत्कालीन समाज सुधारकों से भिन्न आम नारियों की जिंदगी में झांककर उनकी समस्याओं को बहु नजदीक से जानने समझने की कोशिश करते हैं। प्रेमचंद ने मूल्यहीन, रहस्यमयी, मनोरंजक विषयों के स्थान पर वास्तविक एवं अपने इर्द-गिर्द घटित होने वाली घटनाओं को कथा साहित्य का आधार बनाया। उनकी कहानियां 'मानसरोवर' के आठ भागों में संकलित हैं। प्रेमचंद ने कहानियों में नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं का वर्णन किया है किंतु वे सिर्फ समस्याओं का विवरण नहीं देते अपितु उसमें परिवर्तन लाना जरूरी समझते हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रेमचंद की कथा साहित्य का मूल उद्देश्य था- 'नारी मुक्ति' । जिसका समर्थन शंभूनाथ भी किया है। वे कहते हैं कि- "प्रायः सभी उपन्यासों और कहानियों में प्रेमचंद ने समाजिक कुप्रथाओं पर चोट की और नारी मुक्ति की आवाज उठायी। वह सिर्फ सुधार में विश्वास नहीं करते बल्कि सामाजिक क्रांति भी चाहते हैं । " प्रेमचंद एक संवेदनशील लेखक थे। अतः उन्होंने भारतीय नारियों की समस्याओं का यथार्थ वर्णन किया है l

दहेज प्रथा :-

भारतीय समाज में दहेज प्रथा आज भी नारी शोषण का कारण है। प्रेमचंद युगीन समाज में भी यह प्रथा विराजमान थी यही कारण था कि लोग पुत्री के जन्म पर शोक मनाया करती थे। 'नैराश्य लीला' कहानी में इस कड़वी सच्चाई का वर्णन प्रेमचंद जी ने किया है- "आदमी

अपनी स्त्री से इसलिए नाराज रहते हैं कि उसके लड़कियां क्यों होती हैं? लड़के क्यों नहीं होते ? " निरुपमा की केवल बेटियां होने के कारण उसे पति द्वारा प्रताड़ित होना पड़ता है। अन्ततः अत्यधिक शोक के कारण उसकी मृत्यु हो जाती है। 'उद्धार' कहानी में लेखक ने दिखलाया है कि दहेज की चिंता से कोई भी मां-बाप मुक्त नहीं हो सकते, इसी कारण एक परिवार में सात पुत्रों के बाद भी एक कन्या का जन्म परिवार के लिए बोझ लगता है- "दहेज के अभाव में कोई बूढ़े के गले कन्या को मढ़कर अपना गला छुड़ाता है।

अनमेल विवाह :-

सामाजिक दृष्टिकोण से लड़कियों का विवाह समय पर ना होना कुल के लिए घोर अपमान समझा जाता था। अतः सभी अभिभावक पुत्री का विवाह कर पितृऋण से छुटकारा पाना चाहते थे, लेकिन दहेज प्रथा एवं कभी-कभी माता-पिता के असावधानी के कारण लडकियां अनमेल विवाह की शिकार होती थीं। बेमेल विवाह के विभिन्न रूपों को प्रेमचंद ने दर्शाया है। 'स्वर्ग का मार्ग 'कहानी में एक धनी किंतु बूढ़े व्यक्ति के साथ एक युवती का विवाह होता है। पति हमेशा पत्नी को शक की नजरों से देखता है। पत्नी भी स्वयं को एक कैदी सा महसूस करती है। उसका कहना है कि "मैं इसे विवाह का पवित्र नाम नहीं देना चाहती। यह कारावास ही है। मैं इतनी उदार नहीं हूं कि जिसने मुझे कैद में डाल रखा है उसकी पूजा करूं।"" 'भूत' कहानी का पंडित सीतानाथ पत्नी की मृत्यु के बाद अपनी साली बिन्नी से विवाह करता करना चाहता है।

विधवा की त्रासदी :-

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रेमचंद वैधव्य को भारतीय नारियों के लिए सबसे बड़ा अभिशाप मानते हैं। बाल विवाह, अनमेल विवाह आदि के कारण तत्कालीन समाज में विधवाओं की संख्या अत्याधिक हो गई थी। पुनर्विवाह न होने एवं आर्थिक परेशानियों के कारण वे बदत्तर जीवन जीने को बाध्य थीं। विधवाओं को समाज भी हेय दृष्टि से देखता था। 'नैराश्य लीला' की कैलास कुमारी 13 वर्ष की आयु में ही विधवा हो गई है। जो अपने माता-पिता के अनुसार जीवन व्यतीत करती है। फिर भी समाज उस पर कड़ी निगाह रखता है। उसे यह लगता है कि समाज क्यों नहीं समझता 'विधवा खी 'में भी जीवन है। वह उसे जड़ समझकर अपने इशारों में चलने को क्यों मजबूर करता है? कैलास कुमारी का यह प्रश्न समाज के प्रति आक्रोश है।

प्रेमचंद ने विधवा की वास्तविक स्थिति को 'बेटों वाली विधवा 'कहानी के माध्यम से समाज के सामने रखा है, जहां फूलमती पति की मृत्यु के बाद अपने बेटों, बहुओं के द्वारा सतायी जाती है। जायदाद की बात करने पर वे कहते हैं- "कानून यही है कि बाप के मरने के बाद जायदाद बेटों की हो जाती है।"" 'बूढ़ी काकी' कहानी की विधवा अपनी जायदाद भतीजे बुद्धिराम के नाम लिख देती है। लेकिन जायदाद पाकर बुद्धिराम और उसकी पत्नी उससे दुर्व्यवहार करने लगते हैं। 'पंच परमेश्वर कहानी की बढी खाला की भी लगभग यही स्थिति है।

शिक्षा नारी का जन्मसिद्ध अधिकार नहीं :-

19 वीं सदी के आरंभ में नवजागरण के फलस्वरूप 'स्त्री शिक्षा को बढ़ावा मिला। प्रेमचंद भी नारियों के संपूर्ण विकास के लिए शिक्षा को जरूरी समझा। उनके अनुसार "जब तक स्त्रियां शिक्षित नहीं होंगी और सब कानूनी अधिकार उनको बराबर ना मिल जाएंगे तब तक महज काम करने से काम नहीं चलेगा। "" लेकिन वे पाश्चात्य उच्च शिक्षा के खिलाफ थे। उनके अनुसार नारियों को ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए जिससे वे अपने दायित्वों एवं उचित-अनुचित आदि समझ सके। इसलिए गबन' के एडवोकेट इंद्रधनुष स्त्रियों के लिए शिक्षा अनिवार्य समझते हैं। 'गोदान' उपन्यास में भी प्रोफ़ेसर मेहता 'स्त्री शिक्षा' की उपयोगिता पर भाषण देते हैं। जो मूलतः प्रेमचंद के विचार लगते हैं।

पर्दा प्रथा :-

आज नारी शिक्षा के साथ-साथ शहरों में पर्दा प्रथा प्रायः समाप्त हो चुकी है फिर भी आदर एवं संस्कारवश मध्यम वर्गीय परिवार की स्त्रियां बड़ों के सामने घूंघट डालती हैं। नवजागरण के तहत पर्दा प्रथा को स्त्री की प्रगति में अवरोध माना गया है। सन् 1927 में महारानी बड़ौदा की अध्यक्षता में अखिल भारतीय नारी सम्मेलन हुआ जिसमें पर्दा प्रथा तोड़ने का आहवान किया गया था। प्रेमचंद अपनी पत्नी शिवरानी देवी से भी कहते हैं- "मैं तुमसे कहता हूं कि पर्दा

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

क्यों नहीं छोड़ती । " कभी-कभी पर्दा प्रथा के कारण 'दुराशा' कहानी का हाल हो सकता है। जिसमें दयाशंकर अपने मित्रों को होली के दिन घर बुलाकर भी कुछ खिला नहीं सकता क्योंकि घर में दियासलाई नहीं था और स्त्री बाहर जाकर ना तो दियासलाई खरीद सकती थी और ना ही मांग सकती थी। गांधीजी ने भी आजादी की कामयाबी के लिए स्त्रियों को पर्दे की कैद से आजाद होने की बात की।

इसके साथ ही प्रेमचंद नारी की आम समस्याओं- आभूषण प्रियता, पारिवारिक कलह, संयु क्त परिवार की समस्याएं आदि को भी अपने साहित्य के माध्यम से सुलझाने की चेष्टा करते हैं।

निष्कर्ष :-

प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य (1908-1936 ई.) द्वारा नारी की दयनीयता का चित्रण कर उन्हें इससे ऊपर उठने के लिए नई सोच एवं नई दिशा प्रदान की। प्रारंभ में लेखक ने सिर्फ नारी समस्याओं का चित्रण किया है। लेकिन धीरे धीरे नारियों का मुखर, जागरुक एवं विकासात्मक रूप दिखलाई पड़ता है। जो जरूरत पड़ने पर समाज की रूढ़ियों आडंबरों आदि का खुलकर विरोध करती हैं। सक्रिय राजनीति में भी अपना दबदबा रखती हैं। किंतु प्रेमचंद का नारी जागरण कहीं भी पाश्चात्य का अंधानुकरण नहीं करता । प्रेमचंद का उद्देश्य था नारियों की समस्याओं से परिचित कर उन्हें जागरुक एवं सचेत करना ताकि वे अपने प्रतिष्ठा की लड़ाई खुद लड़ सकें। जहां आधुनिक काल में भी नारियों को केवल अबला एवं श्रद्धा से सम्मानित कर मानवता की परिधि से ही निष्कासित कर दिया जाता है। आज भी स्त्रियां मानसिक एवं जैविक स्तर पर शोषित होती हैं। सभी अधिकारों एवं नारी समानता के बावजूद आज भी गांवों एवं शहरों में नारी संबंधी समस्याएं विभिन्न रूपों में मौजूद हैं। अतः आज से करीब 80-82 वर्ष पहले प्रेमचंद ने नारी अस्मिता एवं मूल्यों के लिए अपने साहित्य द्वारा जो संघर्ष किया वह नवजागरण के इतिहास में बड़ा योगदान है।

संदर्भ सूची

1. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994, पृष्ठ सं. 94
2. रामधन मीना, पुनर्जागरण के अख्याता: मैथिलीशरण गुप्त, चिन्मय प्रकाशन, जयपुर, सं. 1991, पृष्ठ सं.
3. शंभूनाथ, प्रेमचंद का पुनर्मूल्यांकन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1988, पृष्ठ सं. 26
4. प्रेमचंद, नारी जीवन की कहानियां प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, 1987, पृष्ठ संख्या 51.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

5. अमृतराय, प्रेमचंदः विविध प्रसंग भाग 2, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1962, पृष्ठ संख्या 265

6. प्रेमचंद, नारी जीवन की कहानियां, प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, 1987, पृष्ठ संख्या 63

7. अमृतराय, प्रेमचंदः विविध प्रसंग - भाग 3, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1962, पृष्ठ सं 254

8. शिवरानी देवी, प्रेमचंद घर में, आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली, 1956, पृष्ठ संख्या 205